तृतीय अध्याय

• महाभोज • उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ —

` महाभोज ` उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ --

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । मानव कभी भी अकेला नहीं रह सकता । वह हरदम समुह के साथ रहना पसंद करता है । साहित्य समाज का दर्पण है ऐसा कहा जाता है । इसी कारण साहित्य में मानव जीवन के विविध क्रिया-कलापों का दर्शन होता है ।` आज उपन्यास में समाज की प्रगति का हर पहलू प्रतिबिम्बित होता है । अभिजात या सामाजिक समाज का विघटन और आधुनिक युग का आरम्भ,आधुनिक युग के आन्तरिक संघर्ष की बढती हुई तीव्रता और पूँजीवाद के विकास से संयुक्त प्रथा का -ास इ.सभी का प्रतिनिधित्व उपन्यास में मिलेगा । यही नहीं अब मनोरंजन को छोड वे वास्तविक जगत में आ गये हैं । यहाँ मानव के रूदन या क्रन्दन से वे बचकर नहीं निकल सकते । समाज के भीतर वर्ग और वर्ग का संघर्ष, फिर वर्ग के भीतर कुल और कुल का,कुल में परिवार और परिवार का अन्ततोगत्वा परिवार के भीतर व्यक्ति और व्यक्ति का संघर्ष इन सब पर टिककर उपन्यासकार की दृष्टि विकसित होती रही, जिससे उपन्यास में सामाजिक वस्तुओं का अनुपात बढता गया ।` [१]

सामाजिक समस्या --

समाज में व्यक्तियों की मूलभूत आवश्यकताएँ बढती है और सामाजिक संस्था तथा संस्कृति उसे पूर्ण करने में असमर्थ या अयशस्वी हो जाती है तब जो स्थिति पैदा होती है, उसे ही सामाजिक समस्या कहा जाता है । समाज में आए हुए परिवर्तन और उसकी प्रक्रिया से निर्माण हुए सामाजिक विघटन के परिणामों के कारण ही विविध सामाजिक समस्यायें निर्माण होती हैं ।

प्राय: ऐसा माना जाता है कि किसी देश की राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियाँ जिस प्रकार की हुआ करती है,सामाजिक परिस्थितियों का स्वरूप

---

१ भास्कर विमल - हिन्दी में समस्या साहित्य - पृ.८१-८२ ।

स्वत: ही तदनुकूल बन जाया करता है । लेकिन यहाँ हम सामाजिक परिस्थितियों पर ही विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत विचार कर सकते हैं, जो इस प्रकार है --

(१) महामोज में शोषण ।
(२) महामोज में आतंकवाद ।
(३) महामोज में अन्याय और अत्याचार ।
(४) पुलिस प्रशासन की रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार ।
(५) आम आदमी की सामाजिक विवशता ।

(१) महामोज में शोषण --

' महामोज ' में शोषण समस्या पर विचार किया जाता है तब यह दिखाई देता है कि शोषक वर्ग गरीब,मजदूर,हरिजन वर्ग का शोषण कर रहा है । समाज में शोषक और शोषित दो वर्ग बने हुए है । इन दो वर्गों में संघर्ष दिखाई देता है । गाँव सरोहा की सामाजिक स्थिति दयनीय बनी हुयी है । पूँजिपति वर्ग गरीब मजदूरों तथा दलित समाज का शोषण कर रहा है । हम करे सो कायदा बढ गया है । हरिजनों के जीवन को समाज के गुंडों ने उद्‌धवस्त कर दिया है । उनका जीने का हक भी छिन लिया जाता है । पूँजीपति वर्ग अपनी मनमानी करना चाहता है । उनके विरुद्‌ध कोई लडना चाहता है,आवाज उठाना चाहता है तो उसकी आवाज हमेशा के लिए बंद की जाती है,मीटा दी जाती है । गाँव की सरहद से जरा परे हटकर जो हरिजन टोला है वहाँ के लोग सरकारी रेट पर मजदूरी माँगते है । यह बात जोरावर को अच्छी नहीं लगती है । इसलिए वह उनकी झोपडियों को आगमियों सहित आग लगा देता है । इन्सानियत कैसे शैतानियत पर उतर आयी है इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि,

' गाँव की सरहद से जरा परे हटकर जो हरिजन टोला है,वहाँ कुछ

झोपड्यों में आग लगा दी गयी थी, आदमियों सहित ।" [१]

इतना बडा कांड होने के बावजूद भी इस घटना के बाद गुनहगारों को कोई सजा नहीं होती है । जोरावर एक ऐसा गुंडा है जिसने यह आगजनी का भीषण कांड किया है, पर कानून उसे छू नहीं सकता है । जोरावर का पूरे गाँव और पंचायत में दबदबा है । सरपंच भी उसका चाचा ही है । थानेदार से आई.जी.तक की पुलिस इन गुंडों के हाथ में है । प्रांत के मुख्यमन्त्रि तक इनका साथ देते हैं । इसलिए इन गुंडों का गुंडाराज चल रहा है । इन लोगों के खिलाफ कोई लडना चाहता है तो उसकी हत्या की जाती है । गुंडों के भय से उनके खिलाफ कोई लडना नहीं चाहता है । बिसू जैसा युवक इन लोगों के विरुद्ध आवाज उठाता है । बिसू खेत पे काम करने वाले मजदूरों को इतने कम पैसों पर काम मत करो, मजूरी बढाने के लिए लडो उधारी पर जादा सूद मत दो ऐसा समझाता है । अपने समाज के मजदूरों के हक के लिए लडता है । लेकिन जोरावर बिसू की हत्या कर देता है ।

समाज में गुंडों का वर्चस्व दिखाई देता है । अपने खिलाफ लडने वाले या अपने काम में रुकावट डालने वालों को वे हमेशा के लिए चुप कर देते हैं । समाज का स्तर इतना गिर गया है कि लोग गुलामों को तरह इन लोगों की गुलामी कर रहे हैं । उनकी हर ज्यादती को सह रही है । जोरावर जैसा जमींदार गुंडा इन हरिजन समाज में परिवर्तन आने नहीं देता है । पहले की तरह अब भी यह लोग अपने इशारों पर चले इसलिए वह उन्हे मजबूर कर देता है । जोरावर की प्रवृत्ति के बारे में लेखिका ने कहा है -- कि,

" इन हरिजनों के बाप-दादे हमारे बाप- दादों के सामने सिर झुकाकर रहते थे । झुके-झुके पीठ कमान की तरह टेढी हो जाती थी । और ये ससुरे सीना तानकर आँख-में-आँख डालकर बात करते हैं - बरदास्त नहीं होता यह सब हमसे ।" [२]

समाज में परिवर्तन हो जाए तो ये गुंडे कैसे चैन से रह सकते है । इसलिए जोरावर निरंतर गरीबों का शोषण करना चाहता है और इसे कानुन भी साथ

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१० ।

२ तदैव ,, पृ.१६१ ।

देता है। बिसू को मारने से पहले चार साल की कैद होती है उसे जेल में बंद किया जाता है। इन लोगों के शिकंजों में उसे यातनायें भुगतनी पडती है। उसकी मुलायम खाल को ये गिद्ध उसे खाना चाहते है इसलिए उसे भरपूर यातनायें दी जाती है। उसके शरीर के अंदर और बाहर लगे हुए व्रन उसे जीवन के अंत तक साथ देते हैं। बिसू हत्या का आरोप बिन्दा पर लगाया जाता है और बिन्दा को जेल की सिकंजों से टकराना पडता है। अपने हक के लिए लडने वालों को जिन्दा जलाया जाता है।

इस प्रकार `महामोज` में यह देखा जाता है कि कोई एक जोरावर जैसा जमींदार अपने मनमानी कारोबार के लिए शोषित वर्ग का शोषण कर रहा है और उसे राजनीति तथा पुलिस की सहायता मिलती है। इसके कारण समाज में शोषित और शोषक दो वर्ग बने हुए है। शोषक शोषण करते जा रहे है और शोषित दिन-ब-दिन बने हुए है। यही कारण है कि समाज में अमीर अमीर बनते जा रहे है और गरीब गरीब ही रह गए हैं।

(२) महामोज में आतंकवाद --

`महामोज` उपन्यास में आतंकवाद इस विषय पर विचार किया जाता है तब यह ध्यान में आता है कि समाज में गुंडों ने आतंक फैलाया है। पुरे समाज पर आतंक छाया हुआ दिखाई देता हैं। महामोज उपन्यास में गाँव `सरोहा` का जो लेखिका ने चित्रण किया है वह पूरे भारत के गाँवों से मिलता-जुलता चित्रण है। गाँवों का दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण `महामोज` में दिखाई देता है। स्वतंत्रता प्रति के बार आज भी गाँवों की हालत खराब दिखाई देती है। उसमें कोई खास परिवर्तन नहीं दिखाई देता हैं।

गाँव सरोहा दा साहब के चुनाव क्षेत्र में आता है। सरोहा में गरीब, मजदूर लोगों की संख्या ही अधिक दिखाई देती है। इस सरोहा का बेताज बादशाह जोरावर है। जोरावर का चाचा ही इस सरोहा पंचायत का सरपंच है। जोरावर राजनीतिक आश्रय में पला हुआ गुंडा है। अपना मनमानी कारोबार

करने में वह मशहुर है। सरोहा में सामाजिक स्थिति इतनी दयनीय हो गई है कि आम जनता को इन लोगों के अन्याय और अत्याचार सहने पड़ते हैं। हरिजन लोगों को जिंदा जला दिया जाता है। इन हरिजनों की तरफ से लड़ने के कारण बिसू की हत्या की जाती है। लेकिन हत्यारा जोरावर दनदनाता फिरता है। उसे किसी भी प्रकार की सजा नहीं होती। उसके खिलाफ कोई भी लड़ना नहीं चाहता है। समाज में इतना आतंक है कि कोई भी चूं तक नहीं करता है। हरिजन टोले में कुछ झोपड़ियों में आदमियों सहित आग लगा दी गयी थी। लेकिन जोरावर को कोई सजा नहीं हुयी। इस करुन दृश्य को देखकर कोई इन्सानियत वाला खबर देने के लिये थाने जाता है तब उसे पता लगता है कि थानेदार उस दिन छुट्टी पर थे और बात टाल दी जाती है। गुनहगारों को कोई सजा नहीं होती बल्कि लोगों को धमकाया जाता है। समाज में आतंक फैलाया गया है लोग डर के मारे बात नहीं करते है। गाँववाले गुंडों के इशारों पर नाचते हुये दिखाई देते है। उनके मुँह को ताला लगा हुआ दिखाई देता है। इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि ,...

" इसके बाद पता नहीं गाँव वालों को कौन-सा जहरीला साँप सूँघ गया कि सबके मुँह सिल गये।" [१]

समाज में आतंक इतना फैल गया है कि लोगों को जीना मुष्किल हो गया है। जीने की तमन्ना ने उन्हे मजबूर कर दिया है। कोई भी अन्याय के खिलाफ आवाज नहीं उठा पा रहा है। लोग कहते कुछ और करते कुछ है। गुंडागर्दी ने लोगों को इतना भयभीत कर दिया है कि कोई आदमी मर जाने पर,उसकी हत्या करने पर उसके हत्यारे का नाम तक अपनी जुबान पर नहीं लेता। यहाँ तक की मरा हुआ आदमी किसी का बेटा हो तो उसका बाप भी नहीं। ' महाभोज ' में बिसू की हत्या की जाती है और लावारिश लाश की तरह उसे मारकर फैंका जाता है। लेकिन उसके हत्यारे का नाम मालूम होते हुए भी कोई नाम नहीं लेता है। माँ-बाप होते हुए भी लावारिश की तरह बिसू की हत्या होती है। बयान के समय बिसू का बाप भी अपने बेटे के हत्यारे जोरावर का नाम नहीं लेता है।

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१०।

' गुंडों के आतंक ' के कारण लोग कुछ कह नहीं पाते । इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि -- ..

" जैसे ही बिसू की लाश चीर-फाड के लिए शहर गयी, अखाडे के ये लठैत गस्त लगाने लगे गाँव में । उसके बाद लोगों के मुँह से आहें भले ही निकलती रही हों, बात नहीं निकली । बिसू के मारने का तरीका चाहे न समझ में आ रहा हो, पर मरवाने वाले का नाम शायद सब के मन में बहुत साफ था । नाम भी, कारण भी । पर केवल मन में । बयान के समय भी जबान पर कोई नहीं लाया । बिसू का बाप भी नहीं ।" [१]

राजनीतिक नेता लोगों के गुंडों ने समाज में अपना एक अलग स्थान निर्माण किया है । लोगों को डराने और धमकाने के तरीके उन्हें मालूम है । नेता लोगों का काम करने के कारण कानुन का उन्हे डर नहीं है । वह समाज में अपनी हुकूमत से राज कर रहे हैं । बिसू की मौत के बाद लोगों ने गवाही देनी चाहिए थी यह बात दा साहब लोगों को बता रहे हैं । लेकिन दा साहब स्वार्थी नेता है । उपर से संत दिखते हैं लेकिन उनके अंदर हैवान है । उनका ही गुंडा जोरावर बिसू की हत्या करता है । ये उन्हे मालूम है । लेकिन जोरावर को कानुन हाथ तक नहीं लगाता है । इस कारण समाज में आतंक बढ रहा है । कोई हत्या होने या आगजनी जैसी घटना होने के बाद भी लोग बयान नहीं देते क्योंकि उन्हे अपने मृत्यु का डर है । गाँव में कितना आतंक है यह बिन्दा दा साहब से कह रहा है --कि,

" कौन देगा गवाही... मरना है किसी को शिनाख्त करके ? चार दिन यहाँ आकर रह लीजिये... पता लग जायेगा कि कैसा आतंक है ।" [२]

अपने जिन्दा रहने का सवाल लोगों के सामने खडा रहता है । इसलिए कहने वाली बात भी लोग कह नहीं पा रहे हैं । बिसू की मौत को लेकर जो हंगामा मच रहा है इसे फिर से सुलझाने के लिए दा साहब एस.पी.सक्सेना को सरोहा में भेजते हैं । सक्सेना लोगों के बयान लेता है तो उन्हे भयग्रस्त लोग दिखाई देते है । समाज में कोई भी किसी के मामले में पडना नहीं चाहता है । गुंडागर्दी या

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.३१-३२
२ तदैव ,, पृ.७७ ।

गुंडों के भय से कहने वाली बात भी कोई नहीं कह पाता है। इस संदर्भ में सरोहा का एक नागरिक कहता है कि ,' मैं तो भला करने गया था सरकार और मैं ही फँस गया। पर सच कहता हूँ साहब, इस सारे मामले में मेरा कोई कसूर नहीं। मुझे तो न बिसू से कुछ लेना-देना, न बिसू की मौत से '[१]

समाज में हर जगह भय और आतंक लोगों में दिखाई देता है। लोग भय के कारण अपनी इच्छानुसार जीवन बिताने में असमर्थ हैं। एक तरह की मजबूरी उनमें दिखाई देती हैं। जिंदा रहने की इच्छा उन्हें मजबूर कर देती हैं। दोहरी जिंदगी बिताने को गुंडों ने लोगों को मजबूर कर दिया है। जोगेसर सक्सेना को झूठ बोलकर सत्य बात टाल देता है। बयान देते समय आतंक के कारण उसके मन की स्थिति का वर्णन लेखिका ने इस प्रकार किया है कि ...' जोगेसर के मन में एक क्षण को जोरावर का नाम कौंधा जरूर, पर अदृश्य लाठियों ने टिकने नहीं दिया उस नाम को। हिम्मत बाँधकर इतना ही कहा,' हमने कहा न साहब, हमें उसके बारे में कुछ नहीं मालूम।' [२]

समाज में आतंक होने के कारण सामन्य जनता का जीना मुश्कील हो गया है। गुंडों के भय से आम आदमी विवश हो गया है। इन गुंडों के खिलाफ बिन्दा जैसा युवक लड़ना चाहता है, तो उसे साथ देने के लिए कोई तैयार नहीं होता हैं। समाज चंद लोगों के मुठ्ठी में गया हुआ दिखाई देता है। नेता लोगों के आश्रित गुंडे गैरकानुनी काम जोरों से करते हैं। समाज में उनकी ही आवाज गूँजती रहती हैं। बिसू की मौत के बाद सक्सेना बयान लेने आता हैं। बिन्दा एस.पी.सक्सेना को कुछ ठोस सबुत देना चाहता है जिससे बिसू की हत्या के केस पर प्रकाश पड जाय लेकिन डर के मारे उसकी पत्नी रुक्मा उसे कुछ कहने नहीं देती है। उसे अपने भविष्य की चिंता घेरी हुयी है। उसे डर है कि बिन्दा को जोरावर मार डालेगा। तब वह कहाँ जायेगी ? उसका क्या होगा ? प्रत्यक्ष रूप से वह जोरावर का नाम नहीं लेती है लेकिन वह बिन्दा से कुछ न कहने के लिए कहती हैं। और सक्सेना को अब इन्हे छोडने को कहती है। समाज में आतंक के कारण ही लोगों के विचार में बदलाव

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.९८।

२ तदैव ,, पृ.१००।

आया हुआ है। आतंक के कारण ही बिन्दा को कुछ बोलने नहीं देती वर्ना बिसू का दोस्त बिन्दा के विचार से रुक्मा ' बिसू की असली चेली है।'[१] रुक्मा डर के मारे सहम गयी है। उसके सामने अपने जिंदगी का सवाल है इसलिए वह बिन्दा से कहती है कि ,...

' मत बोलो .. मत बोलो... ।' एका एक बिन्दा की बाँह झकझोर - झकझोरकर रुक्मा रोने लगी,' नहीं साब्बे,इन्हें कुछ नहीं मालूम। ये सो उस दिन यहाँ थे ही नहीं। बस,अब इन्हें छोड दो। इन्हे किसी ने कुछ कर-करा दिया तो मैं कहाँ... ?[२]

इस तरह रुक्मा कहती है कि ..

' नहीं मैं चुप नहीं करूँगी... मैं नहीं बोलने दूँगी ... कुछ भी... साब्बे हम पर रहम करो....।'[३]

रुक्मा डर के मारे बिन्दा को बोलने नहीं देती है। बिलकुल इसी तरह आगजनी की घटना के बाद हरिजन टोला के लोग घबराते थे। आगजनी की घटना के बाद बिसू से मिलते नहीं थे, उसे हरिजन टोला में आने को भी उन लोगों ने मना कर दिया था। क्योंकि बिसू और जोरावर का झगडा होता रहता था। बिसू आगजनी की घटना के प्रमाण जुटा रहा था और गुनहगार को सजा देना चाहता था। मजदूरों को अपने हक के लिए लडने के लिए कहता था। और इन सारी बातों से जोरावर नाराज था। अन्याय के खिलाफ लडने वाले बिसू को मदद करने की, सहायता करने की तो दूर उसे अपने यहाँ आने को भी लोगों ने मना कर दिया था। क्योंकि उन्हे जिन्दा रहना था। उनके जिन्दगी का सवाल था। समाज में गुंडों का कितना आतंक था और आतंक के कारण वे कैसी जिन्दगी जी रहे थे इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है -- कि,

' इस आगजनी की घटना के बाद एक हफ्ते तक बिसू से कतराते रहे थे हरिजन टोला के लोग। अपने यहाँ आने को भी मना कर दिया था। डरते थे कि जियादा मिलेंगे- जुलेंगे बिसू से तो कौन जाने उन्हें ही जला-मरवाड दिया जाये।'[४]

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१३७।
२ तदैव ,, पृ.१३९।
३ तदैव ,, पृ.१३९।
४ तदैव ,, पृ.८७।

समाज में गरीबों की लड़ाई लड़ने वाले लोग बहुत कम है। बिसू और बिन्दा जैसा युवक इनकी तरफ से लड़ना चाहता है तो उसे कोई साथ नहीं देता है। इसका फायदा गुंडे उठाते है और अपने खिलाफ लड़ने वालों का काम तमाम करते हैं, उनकी हत्या की जाती है। इन गुंडों की समाज में दहशत है उसके बारे में लेखिका कहती है कि ...

" शाम के समय काम से लौटते हुए लोग कुछ देर खड़े रहकर तमाशा जरूर देखते हैं। यह अखाड़ा गाँव वालों के मनोरंजन का केन्द्र भी है और आतंक का स्त्रोत भी। इसी अखाड़े की आबादी जब अपनी तेल-पिलाई हुई लाठियाँ लेकर गाँव के गली-बाजारों में उतर आती है तो सारे गाँव वालों को साँप सूँघ जाता है और सब की जीभ तालू से चिपक जाती है।" [१]

सामाजिक वातावरण कितना भयग्रस्त है इसका चित्र प्रस्तुत उद्धरण से दिखाई देता है। समाज किसी एक व्यक्ति या उसके गुंडों के इशारों पर चल रहा है। लोग जिंदा रहने के लिए इन लोगों के,गुंडों के अन्याय और अत्याचार सह रहे हैं। मनुष्य की जिन्दा रहने की इच्छा बड़ी तीव्र होती है। जिन्दा रहने के लिए चाहे गुलामी भी क्यों न करनी पड़े वह करते हैं। 'महाभोज' में इसी जिन्दा रहने की इच्छा से लोग गुंडों को मनमानी कारोबार करने देते हैं। इसका फायदा उठाकर गुंडों ने समाज में आतंक फैलाया है। आतंक के कारण आम जनता अपनी बेबस,लज्जास्पद जिंदगी मजबूर होकर बिता रही है। समाज में फैले आतंक का चित्र प्रस्तुत करते हुऐ लेखिका ने कहा है कि ....

" ऐसा आतंक आपने कही देखा नहीं होगा, साहब। लोगों के घर,जमीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ,उनकी आवाज और जबान तक बन्धक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।" [२]

इस तरह समाज के हत्यारों ने अपने स्वार्थ के लिए समाज में आतंक फैलाया है। लोगों के घर,जमीन,गाय,बैल जमींदारों के यहाँ रेहन में रखे हुए हैं। इतने पर

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१०५।

२ तदैव ,, पृ.१३९।

ही इन लोगों का समाधान नहीं हुआ है। इनकी आवाज और जबान तक को इन लोगों ने अपने पास रेहन रखी है। इन हत्यारों को राजनीतिक नेता और पुलिस यंत्रना तक सहायता करती हुयी दिखाई देती है। भ्रष्टाचारी नेता और पुलिस अफसर अपने हाथ गंदे कर बैठे है। बडे बडे जुल्म, आगजनी, हत्या, जैसी घटनाएँ आम हो गयी है।

(३) महामोज में अन्याय और अत्याचार --

`महामोज` उपन्यास के पहले परिच्छेद में पहला ही वाक्य है `लावारिश लाश को गिद्ध नोच-नोचकर खा जाते है।` यह वाक्य अन्याय और अत्याचार का उदाहरण प्रस्तुत करता है। समाज में होने वाले अत्याचार सीमा पार कर चुके है। गुंडो और बदमाशों का अधिकार समाज पर है। लोकहीत या जनहीत की अपेक्षा स्वहीत के कारण सामाजिक स्थिति का चित्र करुणापूर्ण दिखाई देता है।

समाज में सामान्य लोगों का जीना मुस्किल हो गया है। गुंडों के आतंक के कारण आम जनता भयग्रस्त बनी हुयी है। दलित समाज पर दिन-दहाडे अत्याचार किये गये है। लेकिन समाज की ओर, जनता की ओर देखने की किसी को फुर्सत नहीं है। राजनीतिक नेता और पुलिस तक अपने हाथ गंदे कर बैठे है। इसके परिणाम स्वरूप गुंडों और समाज के हत्यारों को बढावा मिल रहा है। वे गरीब-मजदूर लोगों पर अत्याचार कर रहे है। मनुष्य और इन्सानियत का नाता क्या होता है ये गूढि भूल गये है। उन्होंने सिर्फ अपने काम से पैसों से और स्वार्थ से नाता जोडा है। स्वार्थ के कारण लोग अंधे हुये है, मनुष्य में होने वाला मनुष्यत्व मर गया है। पढे पौधों की तरह अपने ही भाई बंदों को चिन्दा जला रहे है। `महामोज` में गुंडों के अन्याय और अत्याचार के संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि,

`गाँव की सरहद से जरा परे हटकर जो हरिजन टोला है, वहाँ कुछ झोपड्यों में आग लगा दी गयी थी, आदमियों सहित। दूसरे दिन लोगों ने देखा

तो झोंपड़ियाँ राख में बदल चुकी थीं और आदमी कबाब में ।" [१]

यहाँ यह दिखाई देता है कि, इन्सानियत कैसे हैवानियत पर उतर आयी है । लोग जानवरों की तरह मारे जाते हैं । चलते फिरते हट्टेकट्टे आदमियों को जिन्दा जला दिया जाता है । जलकर उनके शरीर का कबाब बन जाता है । कितना करुन दृश्य है यह । लेकिन यह सब देखकर इन हत्यारों का हृदय पिघल नहीं जाता है । पत्थरदिल हत्यारे जिन्दा आदमियों को जिन्दा जलाकर अपने स्वार्थ के ` महाभोज ` उडाते हैं ।

राजनीतिक नेताओं के कानुनी संरक्षण पाकर गुंडे दिन-दहाडे बडे-बडे जुर्म करते रहते हैं । लेकिन इन्हे कोई नहीं रोक पाता । सामाजिक वातावरण इतना दुषित एवं गंदा हो गया है कि सामान्य लोगों का जीना मरने में बदल गया है । समाज के हत्यारों के कारण लोगों को जीना मुश्किल हो गया है । कानुन के लोग भी भ्रष्टाचारी बने हुए है,इससे लोगों का कानुन पर होने वाला विश्वास उड गया है । रक्षाक भक्षाक बन गए है । बडे बडे जुर्म करने वालों को जुर्म नहीं लगते हैं । इसलिए बिन्दा सक्सेना के सामने अपना आक्रोश प्रकट करते हुए कहता है कि , ..

" जुर्म की पहचान रह गयी है आप लोगों को ? बडे बडे जुर्म आप लोगों को जुर्म नहीं लगते । जिन्दा आदमियों को जला दो... मार दो... यह सब जुर्म नहीं है न आपकी नजरों में ?" [२]

मानव समाज प्रिय होने के कारण मानव और समाज का घनिष्ट संबंध है । लेकिन जीवन में मानव को कितनी मुसीबतों का सामना करना पडता है,संघर्ष करना पडता है । मानव जीवन एक संघर्ष बन गया है । समाज में अमीर और गरीब इन दो वर्गों के अंतर्गत संघर्ष दिखाई है ।` महाभोज ` में बडे लोगों के हाथ के खिलौने गरीब,मजदूर लोग बन गए हैं । बडे लोग,जमींदार जो भी कहेंगे उन्हें सहना और करना पडता है । इनके खिलाफ कोई एक जवान आवाज उठाता है तो उसकी आवाज सदा के लिए बंद की जाती है । यह सामाजिक स्थिति का चित्र है । बिसू ने

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१० ।

२ तदैव ,, पृ.१३२।

अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के कोशिश की थी । दिन-दहाडे होने वाले जुल्म उसे स्वस्थ बैठने नहीं देते थे । उसके अंदर का मनुष्यत्व जाग उठा था । एक क्रान्तिकारी की तरह वह बेबस ,दलित वर्ग की तरफ से लड रहा था । उन्हें अपने हक की लढाई लडने के लिए तैयार कर रहा था । लेकिन गुंडों और जमिंदारों के साथ मजदूरों की लढाई के मैदाने में उसकी हार हो जाती है । उसे मारा जाता है उसकी हत्या की जाती है उसे मारा जाता है, क्योंकि वह जिन्दा था ।" और जो जिन्दा हैं, वे अब जी नहीं सकते अपने इस देश में । मार दिये जाते हैं, कुत्ते की मौत । जैसे बिसू मार दिया गया ।" [१]

लोकतांत्रिक कहे जाने वाले देश में व्यक्तिगत अधिकार को महत्व होता है । लेकिन' महामोज' में व्यक्तिगत अधिकार को भी गुंडों के पास रेहन रखा गया है । चुनाव में वोट किसे दे दें यह वैसे तो व्यक्तिगत अधिकार है । लेकिन यह व्यक्तिगत अधिकार भी कभी-कभी छीन लिया जाता है । जोरावर अपने अधिकार में वोट देना चाहता है । इसलिए वह अन्य लोगों के वोट भी अपने मन के अनुसार देना चाहता है । इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि, ...

" हमें मालूम है,सुकुल बाबू को वोट देने वाले कौन हैं ? तुम क्या सोचते हो, हमारे रहते बूथ पर पहुँच पायेंगे वे लोग ? जोरावर के राज में वे ही वोट दे पायेंगे जिन्हे जोरावर चाहेगा ।" [२]

समाज में हर जगह अन्याय और अत्याचार को बढावा मिल रहा है । अत्याचारी को संरक्षण और पीडितों का शोषण यह राजनीति बन गयी है । सिद्धान्त और आदर्श को कोई भी स्थान नहीं है । इससंदर्भ में लेखिका कहती है कि, " अत्याचारी को संरक्षण दो और पीडितों को कुचलो । यही थे हमारे आदर्श - हमारे सिद्धान्त,जीन्हे लेकर चले थे हम ? " [३]

समाज में अधिकतम रूप में यह पाया जाता है कि जिस के पास कोई सत्ता है, अधिकार है वह व्यक्ति निर्ममता से लोगोंपर अत्याचार करता ही चला जाता है ।

---

१ मण्डारी मन्नू - महामोज - पृ.१३५ ।
२ तदैव ,, पृ.१७२ ।
३ तदैव ,, पृ.५७-५८ ।

लेकिन इन सब बातों को विरोध करनेवाले लोग बहुत कम होते हैं। ऐसी बातों का नामोनिशान मिटाने के लिए कोई एक क्रान्तिकारी आवाज उठाता है तो उसकी आवाज गूंजने से पहले ही समाप्त होती है,उसकी आवाज मिटा दी जाती है, उसे तुरंत कुचल डाला जाता है। समाज में पुलिस होती है लोगों की सुरक्षा के लिए। अन्याय और न्याय को सही तरीके से समझाने के लिए। समाज में पुलिस होती है गुनहगारों को पकडने के लिए,उसे शिक्षा दिलाने के लिए किन्तु आज समाज में इसके बिलकुल विपरित स्थिति दिखाई देती है। यही कारण है कि' महाभोज ' में बिन्दा सक्सेना साहब से इस प्रकार की शिकायत करता कहता है कि...

' कारण तो सबका निकल आता है, साहब। बेगुनाहों को पकडने का भी और गुनहगारों को छोडने का भी। यही तो न्याय है आप लोगों का।'[१]

बिन्दा का कहना सही है। क्योंकि सरेआम दिन - दहाडे जुल्म करने वालों को कोई सजा नहीं होती। बेगुनाह होते हुए भी बिसू को चार साल जेल काटनी पडती है। उसे जेल में भरपूर यातनायें दी जाती है। पंख कटे हुए पंछी की तरह उसकी स्थिति होती है। आकाश में विहार करने की उसकी इच्छा है लेकिन पंख कटे हुए हैं। बिलकुल इसी प्रकार बिसू भी अपना टूटा-फूटा घायल शरीर लेकर आता है। फिर से एक बार वह अन्याय के खिलाफ लडना चाहता है तो उसकी हत्या की जाती है। आगजनी और हत्या जैसी भयंकर घटनाओं में जोरावर भयंकर अपराधी होते हुए भी उसे कानून छु तक नहीं सकता है। उसे बेगुनाह करार कर दिया जाता है। ईमानदार एस.पी.सक्सेना जो ईमानदार होने के कारण झूठे दोषारोपन करके निलम्बित किया जाता है। बिसू का आशिक दोस्त बिन्दा जो की निरपराध होते हुए भी उस पर बिसू की हत्या का झूठा आरोप लगाकर गिरफ्तार कर दिया जाता है। पुलिस की लाठियों की बौछार के बीच बिन्दा कह रहा है कि' मैंने बिसू को नहीं मारा... मैं बिसू को मार ही नहीं सकता। मुझे तो उसकी आखिरी इच्छा पूरी करनी है।

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१३६।

मैं उसे पूरी करके ही रहूँगा .. चाहे जैसे भी हो,जो भी हो... ।"[१] लेकिन पुलिस वालों की मार की रफ्तार और तेज हो जाती है । बिन्दा के शरीर को रुई की तरह धुनकर वे उसे बे-दम कर देते हैं । आवेश उसका सिसकियों में बदल जाता है और गर्जना कराह में ।

इस तरह देखा जाता है कि ' महामोज ' में आम आदमी पर होने वाले अन्याय और अत्याचार इतने भयानक है कि जिन्हे देखकर शैतान भी काँप उठे ।

(४) पुलिस प्रशासन की रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार --

समाज में सामाजिक स्थिति सुव्यवस्था रखने के लिए पुलिस होती है । गुनहगारों को खोजकर उन्हे सजा देने के लिए पुलिस होती है । लेकिन पुलिस और प्रशासन में भ्रष्टाचार बढ गया है । कानून के अधिकारियों ने अपने हाथ में कानुन लिया है और गुंडों या गुनहगारों को भी कानून हाथ में लेने का मौका दिया है । समाज में शांति तथा सद्भावना रखने के बदले अशांतता फैलाने में गुंडों की मदद की है । गुंडों और बदमाशों से अपने हाथ मिलाये है । ' महामोज ' में हरिजन टोला में आदमियों को उनकी झोपडियों सहीत जिन्दा जला दिया जाता है । इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि" हरिजन टोला है,वहाँ कुछ झोपडियों में आग लगा दी गयी थी,आदमियों सहित ।"[२] इतना बडा जुल्म होते हुए भी कानुन गुनहगार को पकडकर सजा देने में असमर्थ है । क्योंकि थानेदार से लेकर आई.जी.तक की पुलिस यंत्रना अपने हाथ रिश्वत से गंदि कर बैठी है । इन हत्यारों के खिलाफ कोई आवाज उठाता है तो उसे नक्सली आदि झुठे दोष लगाकर जेल में बंद किया जाता है । बिसू को ऐसे ही चार साल के लिए जेल में बंद करके यातनायें दी गई थी ।

पुलिस की सहायता के कारण गुंडों को कानुन का भय नहीं है । अपने खिलाफ लडने वाले बिसू को जोरावर जैसा गुंडा मार देता है । लेकिन बिसू की हत्या का

---

१ मण्डारी मन्नू - महामोज - पृ.१८३ ।

२ तदैव ,, पृ.१० ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

आरोप बिन्दा पर लगाया जाता है और उसे गिरफ्तार किया जाता है ।
' महाभोज ' में पुलिस यंत्रता कितनी निकम्मी बन चुकी है , यह दिखाई देता है । बिसू की हत्या के बाद ' हत्या ' आत्महत्या में परिवर्तित होती है और बाद में बिसू हत्या का आरोप बिन्दा पर लगाया जाता है । ईमानदार सक्सेना को अनावश्यक तबादलों को झेलना पड़ता है और बाद में उसे निलम्बित किया जाता है । डी.आई.जी.सिन्हा जैसा पुलिस अफसर भी अपने स्वार्थ के लिए प्रमोशन के लालच में आकर अपना ईमान तक बेच देता है । अपने नीजी स्वार्थ के कारण किसी बेगुनाह को कितना दर्द सहना पड़ता है,जेल की यातनायें भुगतनी पड़ती है, पर इन लोगों को इन सारी बातों से कोई दु:ख नहीं होता है। बल्कि वे अपने प्रमोशन का आनंद मनाते है । प्रमोशन के मौके पर जश्न मनाते है । डी.आई.जी.सिन्हा को आई.जी.का स्थान मिलता है । ' आई.जी.के रिक्त स्थान को डी.आई.जी.सिन्हा ने संभाल लिया है । '[1] डी.आई.जी.की प्रमोशन की पार्टी में बड़े बड़े सरकारी अफसर,व्यापारी,वकील,डॉक्टर आये है । शीवाज-रीगल,ब्लेक-डॉग से लेकर देशी रम तक की शरायें रखी है । यहाँ यह विचार करने की बात है कि डी.आई.जी. की हैसियत वाला आदमी इतनी बड़ी पार्टी कैसे दे सकता है । सच है कि उसके हाथ रिश्वत से भरे हुए है । लेकिन पार्टी में आये हुए पढे-लिखे लोग भी इस बात पर विचार नहीं करते है कि डी.आई.जी.को लगातार मिलने वाला प्रमोशन इसके पिछे कौनसा राज छिपा हुआ है । यह सब देखकर ऐसा लगता है कि पढे-लिखे लोगों की सद्सद्विवेक बुद्धि पर सान चढी हुई है ।

जनता की आवाज समझे जाने वाले समाचार पत्र भी इससे अछूते नहीं है । समाचार पत्रों और पत्रकारों को जनता का पहरेदार कहा जाता है । लेकिन ये पहरेदार ही लुटेरे बन गए है । ' महाभोज ' में ऐसा ही एक संपादक है ' दत्ता बाबू ' । ' दत्ता बाबू ' मशाल ' नामक समाचार पत्र के संपादक है । अपने कर्तव्य के प्रति अतिसजग रहने वाले,अपने समाचार पत्र में भ्रष्टाचार ,आतंक और समाज के विघातक कृत्यों के खिलाफ आवाज उठाने वाले,आग उगलने वाले दत्ता बाबू भी अपना कर्तव्य

---

१ भण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१६८ ।

भूल गए है। कागज का कोटा और सरकारी इस्तहरों के लालच में आकर दत्ता बाबू जनता जनतंत्र और पत्रकारिता के धर्म एवं आस्था तक का गला घोंटते हैं।

इस तरह यह देखा जाता है कि 'महाभोज' में पुलिस प्रशासन में थानेदार से आई.जी.तक के अधिकारी भ्रष्टाचारी एवं रिश्वतखोर है। विचार करने की बात यह है कि अखबार या समाचार पत्र के संपादक, जनसंपर्क के साधन भी इससे अछूते नहीं हैं। रिश्वतखोरी के कारण ही सामाजिक स्थिति बिगडी हुअी है। इसके कारण ही किसी की हत्या आत्महत्या में परिवर्तित होती है। किसी की हत्या का आरोप किसी बेगुनाह के माथे मारा जाता है। ईमानदारी और कर्तव्यनिष्टा के कारण किसी को निलम्बित होना पडता है,तो यह रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार की समस्या सामाजिक समस्या का रूप धारण कर लेती है।

(५) आम आदमी की सामाजिक विवशता --

जब समाज में गुंडों का 'गुंडाराज' चलता है तो आम आदमी का विवश हो जाना स्वाभाविक है। समाज में न्याय के बदले अन्याय और अत्याचार होने लगते है,तो आम आदमी को असुरक्षित पाया जाता हैं।' महाभोज ' में आम आदमी विवश दिखाई देता है। राजनीतिक नेता लोगों का समाज की ओर, जनता की ओर ध्यान नहीं हैं। अपने स्वार्थ सिद्धी के लिए उन्होंने गुंडो को राजकीय आश्रय दिया है। जोरावर जैसा गुंडा जो जमींदार भी हैं। उसकी खेती में हरिजन मजदूर दिन-रात पसीना बहाते हैं। लेकिन जोरावर इन्हें नाम मात्र मजदूरी देता है। इसके खिलाफ मजदूर आवाज उठाने की कोशिश करते है तो उन्हे जिन्दा जला दिया जाता है। अन्याय और अत्याचार की कोई सीमा नहीं है। इन लोगों की करतुतों से तंग आकर कोई बिसू जैसा युवक मजदूरों की तरफ से लडना चाहता है तो उसे जेल की यातनायें भुगतनी पडती है। जेल से छोडने के बाद अपने घायल शरीर को लेकर फिर से लडता है तो उसकी हत्या की जाती हैं। गरीब मजदूर हीरा के देखे हुए सपने उसके मन में ही रह जाते हैं। बिसू उसका बेटा था। हीरा ने मेहनत मजदूरी करके उसे शहर भेजकर पढाया था। इस संदर्भ में हिरा का कथन है कि " मेहनत - मजूरी कीन... रुखी..सूखी खायी पर

अपने बिसू को बहुत पढावा रहा ।"[१] हीरा ने रुखी सुखी रोटी खाकर उसे पढाया था ताकी वह बडा आदमी बने । कुर्सी पर बैठकर काम करे । आगे जाकर हिरा ने कहा है कि ` न जाने कउन-कउन सपना देखा रहा... बडा आदमी बनि है .. कुर्सी पर बइठ के काम करि है ।"[२] पर हिरा के सपनों को पूरा करने के पहले ही बिसू का करुण अंत हो जाता है और जोरावर और गुंडों के सपने पूरे हो जाते हैं ।

समाज में आतंक फैल गया है । गुंडों और बदमाशों को कानुन की भी सहायता मिलती है । समाज की तरफ से ,आम आदमी की तरफ से कानुन भी नहीं लडना चाहता है । जनता की आवाज समझे जाने वाले समाचार पत्र भी बिक चुके हैं । जनसंपर्क के साधनों ने भी समाज कीओर से आँखें फेरी हैं । पूरा समाज भयग्रस्त दिखाई देता है । न्याय के बदले अन्याय के कारण बिसू का साथी उसका दोस्त बिन्दा पर मित्र हत्या का झूठा आरोप लगाकर जेल में भेज दिया जाता है ।उसे जेल की यातनायें और दण्ड को भुगतना पडता है । ईमानदार पुलिस अफसर सक्सेना को अनावश्यक तबादलों को झेलकर अंत में सस्पेंशन का ऑर्डर पढने को मिलता है । भ्रष्टाचारी डी.आई.जी.सिन्हा आई.जी.बनकर प्रमोशन का महाभोज उडाता है । बिन्दा की गिरफ्तारी और सक्सेना के निलम्बन से उत्साहित होकर जोरावर जश्न मना रहा है । यह समाज की पूरी परिस्थिति आम आदमी को विवश कर देती है ।

हरिजन टोला में आगजनी,बिसू की हत्या और बिन्दा की गिरफ्तारी आम आदमी की विवशता है । हीरा के माध्यम से बिसू की खाल बहुत मुलायम थी वह कहता है कि ` बहुते मुलायम रही खात्म हमरे बिसू की ।"[३] कह जाना उसकी सामाजिक विवशता है । बिसू के बारे में देखे हुए सपने उसके बहते हुए आँसूओं के साथ बहकर जाते हैं । हिरा के बहते हुए आँसू आम आदमी के आँसू है, जो समाज

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१०९ ।

२ तदैव ,, पृ.१०९ ।

३ तदैव ,, पृ.११४ ।

के हत्यारों के कारण विवश बनकर बह रहे है ।

इस प्रकार महामोज में बिसेसर और बिन्दा की विवशता वास्तव में आम आदमी की विवशता बन गयी है ।

निष्कर्ष ---

` महामोज ` उपन्यास के पहले परिच्छेद में पहला ही वाक्य है ` लावारीश लाश को गिद्ध नोच-नोचकर खा जाते है ।` यह वाक्य सामाजिक स्थिति का उदाहरण प्रस्तुत करता है । समाज में गुंडों का वर्चस्व दिखाई देता है ।अन्याय और अत्याचार दिन-ब-दिन बंद रहे है । अन्याय करनेवाले और अन्याय सहनेवाले दो वर्ग बने हुए है । आतंक के कारण सामान्य लोग भयग्रस्त दिखाई देते हैं जिंदा आदमियों को जलाया जाता है । बेगुनाह बिसू की हत्या की जाती है । गुनहगार जोरावर जश्न मनाता है और बेकसुर बिन्दा को गिरफ्तार किया जाता है । पुलिस प्रशासन की रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार के कारण गुंडों को बढावा मिल रहा है । जनता की आवाज समझे जाने वाले समाचार पत्र भी इससे अछूते नहीं है । रिश्वत का बाजार गर्म हुआ है । सामान्य लोगों की ओर से राजनीतिक लोगों ने भी मुँह मोड दिया है । सब अपना तथा अपनों का ही हित करना चाहते है । समाज में अस्थिरता ,आतंक, भूख अनास्था आदि के स्वर गूँज रहे है । सामान्य आदमी विवश बना हुआ है ।